

निबंध के कुछ उदाहरण

(१) विज्ञान के चमत्कार

“कर देता हर मुश्किल आसान,
यदि सफल-सुफल हो विज्ञान।”

आज का युग विज्ञान का युग है। तरह-तरह की वैज्ञानिक खोजों ने मनुष्य के जीवन में क्रांति ला दी है। विज्ञानरूपी घोड़े पर सवार होकर नित्य नए चमत्कार करता जा रहा है।

सर्वप्रथम हम घरेलू जिंदगी का उदाहरण देख सकते हैं। एक समय था, जब घर में मिट्टी का दीया जुगनु था, लेकिन आज बिजली की करामात से रात में क्रिकेट मैच खेला जा रहा है। वातानुकूलित कमरे में सुख व वैज्ञानिक उपकरणों की खोज से हमारी जिंदगी आरामदायक बन गई है।

यातायात के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देकर विज्ञान ने हमारी यातायात की समस्या हल कर दी है। अनुसार हम मोटरों, रेलगाड़ियों, वायुयानों या जलयानों के माध्यम से अपने इच्छित स्थान पर सुगमता से आ-

चिकित्सा के क्षेत्र में वैज्ञानिक चमत्कारों ने सभी को चमत्कृत कर दिया है। भयंकर बीमारियों का इलाज है। आज अंधे को आँख मिल सकती है तथा जरूरत पड़ने पर शरीर के अंग-प्रत्यंग भी बदले जा सकते हैं। एच. तथा सीटी स्कैन के द्वारा शरीर के भीतरी भागों की जाँच-पड़ताल और इलाज संभव हो गया है। चेचक, टायफाइड, टी.बी. तथा कैंसर जैसी घातक बीमारियाँ भी अब इलाज के दायरे में हैं।

मनोरंजन के क्षेत्र में विज्ञान की देन महत्त्वपूर्ण है। रेडियो, दूरदर्शन, कंप्यूटर, सी. डी. प्लेयर से हमारा मन है। सिनेमा तो विज्ञान की अनुपम देन है। मनोरंजन के इन साधनों से जनता को आनंद की प्राप्ति हो रही है।

कृषि के क्षेत्र में भी विज्ञान ने ऐसे उपकरणों का निर्माण किया है, जिनकी सहायता से कृषिकार्य कठिन किसानों को खेतों में अथक मेहनत करनी पड़ती थी, लेकिन आज विज्ञान की मदद से ट्रैक्टर, पंपिंग सेट, टर्न अन्य मशीनों का आविष्कार हो गया है। इनकी सहायता से किसान भाई अपना कृषि-कार्य आसानी से कर सकेंगे। संकरित बीजों से उत्पादन बढ़ा रहे हैं, कीटनाशकों से फसलों को बचा पाते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में भी विज्ञान ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। मुद्रण-यंत्र के निर्माण से शिक्षा के प्रचार-प्रसार मिल रही है। आजकल कंप्यूटर के माध्यम से शिक्षा का कार्य बड़ी सुगमता से संपन्न हो रहा है। अनेक विषयों के द्वारा की जा सकती है। इंटरनेट की सुविधा से विभिन्न विषयों से संबंधित कोई भी जानकारी पलभर में प्राप्त है। इस प्रकार कंप्यूटर ने ज्ञान-विज्ञान का पिटारा खोल दिया है।

विज्ञान ने कई प्रकार के अस्त्रों-शस्त्रों का भी आविष्कार किया है, जिससे व्यक्ति तथा राष्ट्र की सुरक्षा इसके दुरुपयोग से मानव जीवन की क्षति तो होती है, लेकिन फिर भी समय की माँग के अनुसार विज्ञान ने क

(९) सेल्फी : एक मनोरोग

हमारी प्राचीन सभ्यता ने अपनी कल्पनाओं को ताम्रपत्रों, शिलालेखों, पत्थरों, एवं गुफाओं में चित्रों व लेखों के माध्यम से उकेर कर संजोया हुआ है। इसके पीछे आशय यही रहा होगा कि आनेवाले समय में भी उनकी पहचान बनी रहे।

आज का युग विज्ञान व प्रौद्योगिकी का युग माना जाता है। प्रौद्योगिकी की क्रांति ने अंतरजाल (इंटरनेट) फेसबुक, व्हॉट्सअप को बहुत ही तेजी से सक्रीयता प्रदान कर दी है। प्रसारण मीडिया के खबर की भाँति आज का व्यक्ति भी अपने आप को सक्रीय रखना चाहता है। यह प्रवृत्ति किशोरावस्था के बच्चों में अधिक देखने को मिल रही है। सेल्फी उसी का एक उदाहरण है।

आज किसी भी उम्र का व्यक्ति इस 'सेल्फी मेनिया' से अछूता नहीं है। अधिकतर लोग इस मनोरोग से ग्रसित हो रहे हैं। प्रत्येक प्रवृत्ति के दो पहलू होते हैं। सही या गलत दोनों ही असर प्रवृत्ति विशेष में विद्यमान रहते हैं। सेल्फी अपडेट के कारण कई बार बड़े-बड़े मसले हल हो जाते हैं। लेकिन इसी सेल्फी अपडेट के कारण ही कई बार अपहरण, चोरी व लूट जैसी घटनाओं का भी शिकार होना पड़ता है।

कई किशोरों में अपने आपको बढ़-चढ़ कर बताने की होड़ देखने मिलती है। जिसके कारण वे कई खतरनाक प्रवृत्ति भी करने से नहीं चूकते हैं। चलती ट्रैन में लटककर, ट्रैन की छत पर, पहाड़ की चोटी पर, चलती मोटर बाइक पर सेल्फी लेते हुए कई बार उन्हें देखा गया है। उपर्युक्त तरीकों में कई बार जान जाने की खबरें भी सुनाई पड़ी हैं। आए दिन अखबार व टेलिविजन पर यह खबर प्रसारित करते हुए सुना है कि सेल्फी लेते हुए दुर्घटनाग्रस्त हो गए।

पर यह खबर प्रसारित करते हुए सुना है कि सेल्फी लेते हुए दुर्घटनाग्रस्त हो गए। इसे अंकुश में लाना बेहद जरूरी है। सेल्फी का शौक एक मनोरोग की भाँति हमारे आस-पास फैलता जा रहा है।